E Content for the student of Patliputra University

Subject - Political Science

Class B.A.(Hons.) Part-III Paper-VIII

Topic - Bal Gangadhar Tilak.

Dr. Umesh Chandra Shukla
Associate Prof. Pol.Sc.
R.R.S. College, Mokama

1885 में कांग्रेस की स्थापना हुई। धीरे-धीरे यह राजनीतिक गतिविधियों का केन्द्र बनता गया। प्रारम्भ में चूंकि इसकी स्थापना ही अंग्रेजों की पहल तथा सहयोग से हुआ था इसलिए यह उदार, संवैधानिक तथा मांगों के प्रतिवेदन भेजने तक ही अपनी भूमिका का निर्वाह करता था। इसलिए इस युग का नाम ही उदारवादी चरण बताया जाता है।

1905 के बाद कांग्रेस में नये नेतृत्व का आगमन हुआ। इनकी कार्यशैली भारतीयों के हितों को आगे बढ़ाने की रही। इसके लिए दबाव बनाने, आंदोलन करने तथा जन जागरूकता का अभियान छेड़ने की रही। इस चरण के नेताओं ने खुल्लमखुल्ला स्वराज्य की प्राप्ति का नारा बुलन्द किया। इस चरण की गतिविधियों से स्पष्ट लगने लगा कि स्वतंत्रता का आंदोलन प्रारम्भ हो गया। कांग्रेस का नेतृत्व उद्देश्य तथा कार्यशैली बदल गई। 1906 में कांग्रेस की अध्यक्षता कलकत्ता अधिवेशन में दादाभाई नौरोजी कर रहे थे, वहीं यह घोषित किया गया कि कांग्रेस का अन्तिम लक्ष्य स्वराज्य की प्राप्ति है। इसके पूर्व 1905 में कांग्रेस के बनारस अधिवेशन में कांग्रेस का लक्ष्य स्वराज्य की प्राप्ति है घोषित करने के लिए दबाव बनाया गया था।

इस नये युग के नेता थे - बाल गंगाधर तिलक, विपिन चन्द्र पाल तथा लाला लाजपत राय। इनके नाम के आधार पर इस चरण को बाल, पाल तथा लाल का युग कहा जाता है।

इन नेताओं ने स्पष्ट कर दिया कि कांग्रेस का अन्तिम लक्ष्य स्वराज की प्राप्ति होगी। इसके लिए आंदोलनात्मक संघर्ष किया जायेगा। आवश्यकता पड़ने पर बड़ी से बड़ी कुर्बानी देने के लिए तैयार रहना होगा।

तिलक का इस वाक्य काफी लोकप्रिय हुआ - "स्वराज हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है, हम इसे लेकर रहेंगे।" (Freedom is our birth right and I have it) विपिन चन्द्र पाल ने कहा कि स्वतंत्रता हमें अगर भीख में देने को आये तो हम स्वीकार नहीं करेंगे। हम स्वतंत्रता छीन कर लेने में विश्वास करते हैं, जिससे हम सिद्ध कर सकें कि स्वतंत्र रहने के योग्य हैं। लाला लाजपत राय ब्रिटिश सरकार के शोषण के आंदोलन चला रहे थे। वे स्वतंत्रता के अग्रदूत रहे।

बाल गंगाधर तिलक ने स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी अग्रणी भूमिका का निर्वाह किया। उन्होंने सबसे पहले इस बात पर ध्यान दिया कि देशवासियों में पहले राष्ट्रीयता एवं देशप्रेम की भावना से ओत प्रोत किया जाय।

तिलक ने इसके लिए "गणपति उत्सव" तथा अखाड़ा कार्यक्रम का आयोजन किया। वे समझते थे कि, अशिक्षा, संचार के साधनों के अभाव में लोगों को एकत्र करना कठिन कार्य है। ग्रामीण तथा अशिक्षित लोग भी गणपति उत्सव तथा अखाड़ा कार्यक्रम में इकट्ठा आसानी से हो सकते हैं। ऐसे मेले में राष्ट्र-प्रेम, स्वराज तथा ब्रिटिश सरकार के शोषण के संदर्भ में आसानी से समझाया जा सकता है। उन्हें जागरूक किया जा सकता है तथा स्वतंत्रता आंदोलन के लिए तैयार किया जा सकता है। महाराष्ट्र के शहर-शहर, कस्बे तथा गाँवों में यह आंदोलन के रूप में अभियान चलने लगा। इस कार्यक्रम में आशातीत सफलता मिली।

तिलक ने राष्ट्रीय हीरो के रूप में शिवाजी को बतलाया। शिवाजी के नाम पर मराठा की जनता में राष्ट्रीयता की भावना उफान लेने लगी। उन्हें बतलाया जाने लगा कि किस प्रकार शिवाजी ने विदेशी सत्ता, ~~मुगल~~ मुगलों की सत्ता को चुनौती देकर एक बड़े मराठा साम्राज्य की स्थापना की।

1907 में प्लेग की बिमारी महाराष्ट्र में फैल गई। इसमें ब्रिटिश अधिकारी राष्ट्रवादी तथा सामान्य लोगों के बीच भेद भाव करने लगे। इसका व्यापक विरोध हुआ। इसमें प्लेग कमीशनर मि० रैंड की हत्या कर दी गई। इसका आरोप तिलक पर लगा। उनपर आरोप था कि उन्होंने लोगों को भड़काया। वे गिरफ्तार कर लिए गये। किन्तु वे तो जनता के नायक हो चुके थे।

1905 में ही उन्होंने स्वराज्य की प्राप्ति हेतु आंदोलन छेड़ा। इस आंदोलन के तीन कार्यक्रम थे - स्वदेशी, बहिष्कार और राष्ट्रीय शिक्षा। उन्होंने स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग करने, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने तथा राष्ट्रीयता की भावना जागृत करने वाली राष्ट्रीय शिक्षा का कार्यक्रम किया गया। आंदोलन काफी सफल रहा। 1908 में तिलक को गिरफ्तार किया गया। इनपर राजद्रोह का मुकदमा चला। उन्होंने अपने मुकदमें की पैरवी स्वयं की। इन्हें 6 वर्ष की कारावास की सजा दी गई, तथा बर्मा के मंडेल जेल में इन्हें भेज दिया गया।

मंडेल जेल में तिलक ने दो पुस्तकों की रचना की। पहली पुस्तक "गीता रहस्य", जिसमें गीता की व्यापक व्याख्या प्रस्तुत की। इस पुस्तक के आधार पर उन्होंने यह सिद्धांत निरुपित किया कि हमें उत्तम साध्य की प्राप्ति पर ध्यान देना चाहिए; चाहे साधन जैसा भी हो। इसी पुस्तक में उन्होंने यह सिद्धांत निरुपित किया

कि आर्यों का वास स्थान नहीं है, वे कहीं बाहर से नहीं आये हैं। दोनों ग्रन्थ आज भी काफी लोकप्रिय हैं।

1914 में जेल से छूटने के बाद उन्होंने एनी बीसेंट के साथ होमरूल आंदोलन चलाया। बाद में 1916 में लखनऊ पैक्ट के अंतर्गत कांग्रेस के दोनों ग्रुप एक हो गये तथा एक ही मंच तथा आवाज से स्वतंत्रता की लड़ाई चलाने का निर्णय लिया गया। 31 जुलाई 1920 की रात्रि में इस महान नायक का निधन हो गया। ~~अपनी~~ स्वतंत्रता के लिए उनके द्वारा जलाये गये मशाल बाद में भी क्रांतिकारियों के प्रेरणा स्रोत बने रहे। ब्रिटिश पत्रकार सिरोल तिलक को Father of Indian unrest कहता था, सच्चाई यह है कि वे Father of Indian Nationalism थे।